बिरसा कृषि विश्वविद्यालय

राँची–834006 (झारखण्ड)

BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY

RANCHI-834006 (JHARKHAND)

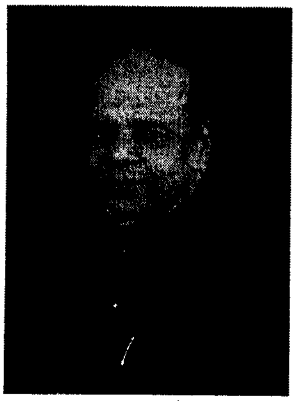

Shri K. Sankaranarayanan
His Excellency Governor-cum-Chancellor

Dr. N.N. Singh
Vice Chancellor

झारखण्ड के लिए आकस्मिक कृषि योजना
(Contingent Agriculture Plan for Jharkhand)

1. किसानों के लिए आवश्यक सलाह
(Common advice for farmers)

(क) फसलें **(Field Crops)**

अभी जो वर्षा हो रही है, उसमें यदि बिचड़ा 60 दिन तक का है तो उसकी रोपाई कदवा किये गये खेत में की जा सकती है। रोपाई के समय डी. ए. पी. तथा पोटाश की अनुशंसित मात्रा से दुगुनी खाद प्रयोग करें तथा पौधों की रोपाई नजदीक (10x 10 सेमी दूरी पर) करें। 125 तथा 140 दिन में पकने वाली किस्में जैसे आई. आर. 64, ललाट, स्वर्णा, पी. ए. 6444, सम्भा महसूरी, राजश्री आदि किस्मों की रोपाई की जा सकती है।

- हर खेत में किसान भाई ढलान तरफ की 10 फीट लंबी x 10 फीट चौड़ी x 10 फीट गहरी भूमि में तत्काल गढ्डा बनायें ताकि वर्षा जल का संग्रह किया जा सके।
- किसी भी फसल की बोआई बीजों को 4–8 घंटे तक भिंगोकर करें।
- मूंग, उड़द, सरगुजा, चना, मसूर, तिल, सूर्यमूखी, मकई, कुलथी, लोबिया और अरहर की शीघ्र परिपक्व होनेवाली उन्नत किस्में लगायें।

- मानसून की शुष्क अवधि को देखते हुए ज्वार, मक्का, बाजरा, अरंडी (castor) आदि फसलें लगायी जा सकती हैं। इससे मानसून जल्द समाप्त हो जाने की स्थिति में भी पशुओं के लिए हरा चारा के रूप में उनका इस्तेमाल होगा।
- उपजाऊ धान व रोपा धान में झोंका या भूरी चित्ती के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजीम का 0.1% घोल (एक ग्राम प्रति लीटर) या बीम का 0.06% (6 ग्राम 10 लीटर पानी में) घोल बनाकर छिड़काव करें।
- उपजाऊ धान में खरपतवार निकालकर 20 किलोग्राम नाइट्रोजन (50किलो यूरीया) को दो बार, बुवाई के 15–20 दिन बाद तथा 30–35 दिनों के बाद टॉप ड्रेसिंग करें।
- रोपा धान में शीथ ब्लाईट का लक्षण दिखने पर हेक्साकोनाजोल या वेलिडामाईसिन का 0.2% (दो ग्राम प्रति लीटर) की दर से छिड़काव करें।
- आभाषी कन्ड (फाल्स स्मट) की रोकथाम के लिये प्रोपिकोनाजोल (टिल्ट) का 0.1% घोल (एक ग्राम प्रति लीटर) का दो बार छिड़काव करें। पहला छिड़काव बालियाँ निकलने के पूर्व गाभा अवस्था में तथा दूसरा बालियाँ निकलने के 10 दिन बाद करें।
- रोपाई वाले धान को कीड़े से मुक्त रखने के लिये कार्बोफ्यूरान 3G की 30 किलो मात्रा या फोरेट की 10 किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के तीन सप्ताह बाद डालें। फिर 15 दिनों के अंतराल पर दो बार मोनोक्रोटोफास का डेढ़ लीटर या क्लोरपाईरीफास ढाई लीटर दवा का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पत्र लपेटक की रोकथाम के लिये क्वीनलफास का 2 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से तथा गंधी कीट की रोकथाम के लिये क्वीनलफास धूल का 25 किलोग्राम की दर से भुरकाव करें। रोपा धान में देर वाली किस्मों (स्वर्णा) की रोपाई के 3, 6 तथा 9 सप्ताह बाद तथा मध्यम अवधि वाली किस्मों (ललाट व आईआर 64) में 20 किलोग्राम नाइट्रोजन (50 किलो यूरीया) द्वारा खरपतवार निकालकर (टॉपड्रेसिंग) करें। बलियाँ निकलने पर म्यूरेट आफ पोटास की 50 किलो की दर से टॉप ड्रेसिंग करें।
- मानसून की वर्तमान स्थिति के कारण रबी में लगायी जाने वाली फसलों की स्थिति बदल सकती है, इसलिए रबी फसलों के उपयुक्त प्रभेदों के बीजों की अग्रिम में उपलब्धता सुनिश्चित करने से काफी लाभ होगा।

- वर्तमान खरीफ और आगामी रबी फसलों में समय पर उर्वरक प्रयोग के लिए इसकी अग्रिम उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी।
- वर्तमान सुखाड़ के कारण खरीफ 2010 में बीज की उपलब्धता प्रभावित होगी, इसलिए पर्याप्त बीज उत्पादन के लिए आकस्मिक व्यवस्था की जानी चाहिए।
- लगातार वर्षा के कारण पीली पड़ रही फसलों में पूरक नाइट्रोजन उर्वरकों की टॉप ड्रेसिंग करें।
- मोटे अनाज और दलहनी फसलों की बोआई के लिए ट्रैक्टर चालित शून्य कर्षण ड्रिल (Zero tillage drill) के प्रयोग से सीड बेड तैयार करने का समय बचेगा और शीघ्र बोआई की जा सकेगी।
- हर किसान ज्वार, मडुआ, गुंदली जैसे अनाज जरूर लगायें, ताकि सुखाड़ वाले वर्षो में भी कुछ उत्पादन सुनिश्चित हो सके, क्योंकि आनेवाले वर्षों में भी मौसम की दगाबाजी का पूर्वानुमान है।
- बारिश की कमी की वर्तमान अवस्था में मकई की एकल फसल या अरहर के साथ अन्तर फसल (1:1) या अरहर की एकल फसल या लोबिया के साथ अन्तर फसल (अरहर की दो पंक्ति के बीच लोबिया की दो पंक्ति) लगायें।
- सरगुजा की एकल फसल या सरगुजा + कुलथी की अन्तर फसल (4:2) लगायें।
- शहर के निकटवर्ती क्षेत्रों में रहनेवाले किसान गेंदा तथा रजनीगंधा फूल लगाकर अपने छोटे प्लॉट में भी बेहतर आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।
- वर्तमान स्थिति में लोबिया और मूंग लगाने की अनुशंसा की जाती है।

(ख) बागवानी फसलें (Horticultural Crops)

- खेतों में नमी संरक्षण के लिए लाईन में कूंड और मेढ़ प्रणाली अपनानी चाहिए जिससे वर्षा के जल को खेत में रोका जा सके। मेढ़ों को 5–10 मीटर की दूरी पर बांधना चाहिए।
- पांच प्रतिशत ढलान के साथ बागों तथा वनों में 1X1X1 मीटर का गड्ढा बनाकर जल संरक्षण करना चाहिए। फल पौधों के अच्छी तरह स्थापित होने के लिए घास की मल्चिंग करनी चाहिए।
- यदि 7 दिनों से अधिक तक शुष्क अवधि हो तो सब्जी फसलों और नये पौधों में जीवन रक्षक सिंचाई देनी चाहिए।
- फलोद्यान के बीच की जगहों में ग्वार, मोठ और लोबिया जैसी जल्दी अवधि वाली सब्जियाँ लगानी चाहिए।
- मिर्च और भिण्डी के खेत में एक नाली के बाद एक छोड़कर सिंचाई

की जा सकती है या चौड़ी नाली बनायी जा सकती है। इससे उत्पादन पर कोई विपरीत प्रभाव पड़े बिना 15–20% सिंचाई जल की बचत की जा सकती है।

- पपीता, नींबूवर्गीय पौधों, सतालू, कटहल, आदि फल पौधों को जल जमाव से बचाना चाहिए।
- सब्जी पौधशाला में जल जमाव नहीं होना चाहिए।

(ग) पशुधन के लिए (For Livestock)

★ चारा तथा दाना (Feeds & Fodder)

- पशुओं को चराई के लिए पूर्ण विकसित वनों में भेजें तथा भेंड़–बकरियों के लिए वृक्षों की लताओं/पत्तों का इस्तेमाल करें।
- गेहूँ भूसा और धान पुआल की पर्याप्त मात्रा की प्राप्ति, भण्डारण और आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- साइलेज बनाने और पशुखाद्य के रूप में पशुपालकों को उसकी आपूर्ति करने के लिए मकई, ज्वार, बाजरा के ठूंठ और पेराई के बाद बचे गन्ना के अवशेष का एकत्रीकरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- साइलेज बनाने के लिए वन क्षेत्रों के जंगली घासों की कटाई तथा एकत्रीकरण करें।
- दुधारू पशुओं, प्रजनन योग्य पशुओं और उच्च गुणों वाले संकर पशुओं के युवा, बच्चों को खिलाने हेतु पशु दाना का भण्डारण, और पशुपालकों को उपलब्ध कराया जाना।
- चारा मकई, ज्वार, बाजरा, संकर नेपियर, लोबिया तथा मोठ का बड़े पैमाने पर उत्पादन।
- मुर्गीपालकों को सबसिडी के आधार पर कुक्कुट दाना उपलब्ध कराना चाहिए।
- चारा–दाना कार्यक्रम के साथ पूरक खनिज/विटामिन को भी जोड़ा जाना चाहिए।
- रेशेदार भोजन, गैर परम्परागत पूरक पोषक तत्व से युक्त पशु आहार उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- पशु आहार को फफूंद प्रदूषण से बचाना चाहिए और गीला दाना को सुखाने के बाद पशुओं को खिलाना चाहिए।
- खराब हो गये अनाज का इस्तेमाल भोजन के रूप में करना चाहिए।
- ज्वार, लोबिया, चारा घास जैसी सूखारोधी चारा फसलों को उगाना

चाहिए।

- मिनी किट कार्यक्रम के तहत विकास विभागों को सुखाड़ प्रभावित क्षेत्रों में चारा फसलों का बीज उपलब्ध कराना चाहिए।
- पालतू/जंगली पशुओं के लिए पेयजल (Drinking water for domestic/wild animals) की व्यवस्था होनी चाहिये।
- पशुओं के लिए जल संग्रह हेतु वर्तमान तालाबों और प्राकृतिक जलाशयों/जलस्रोतों की खुदाई और गहरा किया जाना।
- पशुओं को छायादार जगहों में रखने से उनकी जल की आवश्यकता कम होगी।
- सुरक्षित वनों तथा राष्ट्रीय पार्क में जंगली पशुओं को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए वर्तमान जल स्रोतों को गहरा किया जाना तथा नये की खुदाई।

★ **पशु स्वास्थ्य (Animal Health)**

- टीकाकरण प्रारम्भ करना चाहिए।
- नियमित रूप से पशु स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया जाना चाहिए।

(घ) मत्स्यपालन के लिए (For Fishery)

- प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए तालाबों में चूना का प्रयोग।
- कैट फिश को लोकप्रिय बनाना।
- सतही जल की दिशा तालाब की ओर मोड़नी चाहिए। जिन क्षेत्रों में भूमिगत जल का स्तर नीचे चला गया है, वहाँ तालाब भरने के लिए भूमिगत जल का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
- प्रजनन वाली मछलियों को बचाकर रखना चाहिए ताकि वर्षा होने और तालाब में पानी एकत्र हो जाने पर प्रजनन के लिए उनका इस्तेमाल हो सके।

2. समयावधि के अनुसार विशिष्ट अनुशंसायें (Specific recommendations according to period)

(क) 31 अगस्त तक के लिए (Specific upto 31st August)

- जल्दी पकने वाली मकई जैसे बिरसा विकास मक्का–2 और बिरसा मक्का–1 तथा बेबी कार्न के लिये किसी भी मक्का को लगा सकते हैं। एच.क्यू.पी.एम.–1 और सुवान भी लगा सकते हैं। अनुकूल मौसम में हरा भुट्टा या दाना के रूप में तथा प्रतिकूल मौसम में चारा के रूप में इसका इस्तेमाल हो सकता है।
- सरगुजा की बिरसा सरगुजा–1 और बिरसा सरगुजा–2 किस्म लगायें।

- अरहर की बिरसा अरहर–1, बहार और नरेन्द्र अरहर–1 किस्म लगायें।
- उड़द का पन्त यू–19, बिरसा उड़द–1, पन्त यू–31 और शेखर–2 प्रभेद लगायें।
- मूंग की पूसा विशाल और एस.एम.एल. प्रभेद अथवा पी.डी.एम.–139 (सम्राट), आई.पी.एम.–99–125 (मेधा) जैसी अति अगात किस्म लगायें।
- कुलथी की मधु और बिरसा कुलथी–1 प्रभेद लगायें।
- मकई और अरहर की मिश्रित खेती 1:1 के रूप में लगायें।
- चारा मकई (अफ्रीकन टॉल या जे–1006) के बीच में चारा लोबिया (यू.पी.सी.–4200) या चारा मोठ (विधान–1) लगायें।
- मकई (विवेक मकई हाइब्रिड–9 और पूसा अर्ली हाइब्रिड मक्का–2) के बीच में कुलथी लगायें।
- अरहर की दो पंक्तियों के बीच में सब्जी लोबिया (पूसा दोफसली, पूसा कोमल, नरेन्द्र लोबिया और पूसा फाल्गुनी) 1:1 के रूप में लगायें।
- सब्जियों की जरूरत पूरी करने के लिए भिण्डी (अरका अनामिका, परभनी क्रान्ति, पूसा ए–4, वर्षा और उपहार), सब्जी लोबिया तथा फ्रेंचबीन (स्वर्ण लता, बिरसा प्रिया, पन्त अन्नपूर्णा और अरका कोमल) लगायें।
- इस अवधि में आलू (कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका और कुफरी कंचन) की बोआई करें। शहर के निकटवर्ती क्षेत्रों के छोटे किसान बेहतर लाभ के लिए गेंदा फूल (पूसा बासमती और पूसा नारंगी) लगायें।
- टमाटर (पूसा रूबी, स्वर्ण सम्पदा और स्वर्ण लालिमा) के बिचड़े तैयार करने का काम प्रारम्भ कर दें।
- पत्ता गोभी (गोल्डन एकर, प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली ड्रम हेड) तथा फूलगोभी (पूसा दीपाली, पूसा केटकी, पटना अर्ली और नरेन्द्र गोभी) की नर्सरी तैयार करें।

(ख) 1 सितम्बर से 15 सितम्बर (1st September to 15th September)

- इस अवधि में सरगुजा तथा कुलथी की बोआई की जा सकती है।
- सब्जी मटर (आर्केल और आजाद पी–1) एकल फसल के रूप में लगाया जा सकता है।
- तोरिया (पी.टी.–303, पांचाली और भवानी) एकल फसल के रूप में लगाया जा सकता है।
- आलू (कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका और कुफरी कंचन) की बोआई हो सकती है।
- टमाटर, गोभी और पत्तागोभी के तैयार बिचड़ों की रोपाई करें।
- शहर के आसपास के किसान गेंदा (पूसा बासमती और पूसा नारंगी) तथा ग्लैडियोलस (अमेरिकन ब्यूटी, जैक्सन विली गोल्ड और हर मैजेस्टी) एवं रजनीगंधा की खेती कर सकते हैं।

(ग) 16 सितम्बर से 30 सितम्बर (16th to 30th September)

- अगात सरसों (पूसा जयकिसन, शिवानी, वरूणा और क्रान्ति) एकल फसल के रूप में लगा सकते हैं।
- तोरिया (पी.टी.–303, पांचाली और भवानी) एकल फसल के रूप में लगा सकते हैं।
- सब्जी के लिए एकल फसल के रूप में बाकला (फाबा बीन प्रभेद विक्रान्त) लगायें।
- टमाटर, पत्तागोभी और फूलगोभी के तैयार बिचड़ों की रोपनी करें।
- गेंदा और ग्लैडियोलस की खेती करें।
- मिर्च (पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार तथा कल्याणपुर लाल), टमाटर (स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण लालिमा तथा पूसा रूबी), बैगन (पूसा पर्पल लांग, स्वर्ण प्रतिभा, पूसा हाइब्रिड–5, पूसा हाइब्रिड–6 तथा स्वर्ण शक्ति), पत्तागोभी (लेट ड्रमहेड) और फूलगोभी (स्नोबॉल–6 और पूसा स्नोबॉल–21) के बिचड़े तैयार करें।

(घ) 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर (1st October to 15th October)

- एकल फसल के रूप में चना (काक–2, आई.सी.सी.वी.–2, एच.के.–94–134 (काबुली) तथा के.डब्लयू.आर.–108 (देशी) लगायें।
- तीसी (टी–397 व शेखर) एकल फसल के रूप में लगायें।
- मसूर (एच.यू.एल.–57 और एल.–4147) एकल फसल के रूप में लें।
- आलू (कुफरी अशोका, कुफरी चिपसोना–1, कुफरी चिपसोना–2 और कुफरी कंचन) एकल फसल के रूप में या मूली के साथ अन्तर फसल के रूप में लगायें।
- एकल फसल के रूप में बीज मटर (डी.डी.आर.–23, स्वर्ण रेखा, मालवीय मटर–2 तथा मालवीय मटर–15) लगायें।
- राजमा (एच.यू.आर.–137, एच.यू.आर.–15 तथा आई.पी.आर. 96–4, अम्बर) एकल फसल के रूप में लगायें।
- सरसों (शिवानी, पूसा बोल्ड, पूसा जयकिसन और वरदान) एकल फसल के रूप में अथवा चना, मसूर और बीज मटर के साथ अन्तर फसल के रूप में लें।
- चारा के लिए बरसीम (बरदान और मिस्कावी) लगायें।
- पत्तागोभी (लेट ड्रमहेड) और फूलगोभी (स्नोबाल–16 और पूसा स्नोबाल–21) के बिचड़े तैयार करें।

(ङ) 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर (16th October to 31st October)

- सब्जी के तैयार बिचड़ों की रोपाई करें।

- चना (काक–2, आई.सी.सी.वी.–2 तथा एच.के.–94–134 (काबुली), के. डब्ल्यू.आर.–108, के.पी.जी.–59 एवं पन्त जी–114 (देशी) एकल फसल के रूप में या तीसी–सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप में लगायें।
- एकल फसल के रूप में मसूर (एल–4147, पी.एल.–406, पी.एल.–639, डी.पी.एल.–62, एन.डी.एल.–1, के.एल.एस.–218, एच.यू.एल.–57 और एल–4076) लगायें।
- बीज मटर (डी.डी.आर.–23, स्वर्णरेखा, मालवीय मटर–2 तथा मालवीय मटर–3) लगायें।
- एकल फसल के रूप में फ्रेंचबीन (स्वर्ण प्रिया, अरका कोमल और स्वर्ण लता) लगायें।
- गेहूँ (सामायिक बोआई, वर्षाश्रित प्रभेद सी–306, के–8962 और एच.डी. आर.–77) एकल फसल के रूप में या सरसों के साथ 5:1 अनुपात में अन्तर फसल के रूप में लगायें।

(च) 1 नवम्बर से 15 नवम्बर तक (1st November to 15th November,)

- सामयिक बोआई वाले वर्षाश्रित गेहूँ की बोआई जारी रखें।
- कम पानी की जरूरत वाली फसल के रूप में जौ (रत्ना व ज्योति) की बोआई करें।
- चारा के लिए जई (यू.पी.ओ.–212 और केण्ट) लगायें।
- चना का एच.के.–94–134 (काबुली), के.डब्ल्यू.आर.–108, के.पी.जी.–59, बी.जी.–372 और पन्त जी–114 (देशी) प्रभेद लगायें।
- मसूर की पी.एल.–406, पी.एल.–639, डी.पी.एल.–62, एन.डी.एल.–1, के.एल.एस.–218 और एच.यू.एल.–57 किस्मों की बोआई करें।
- बीज मटर का डी.डी.आर.–23, मालवीय मटर–2 और मालवीय मटर–15 प्रभेद लगायें।
- कम पानी की जरूरत वाली फसल के रूप में तीसी का टी–397 तथा शेखर प्रभेद लगायें।

परामर्श के लिये कृपया विश्वविद्यालय से निम्न दूरभाष पर संपर्क करें:

निदेशक शोध
दूरभाष: 0651–2450610
फैक्स: 2451011
मो.: 9431958566

निदेशक प्रसार शिक्षा
दूरभाष: 0651–2450849
फैक्स: 2450525
मो.: 9431594093

निःशुल्क किसान कॉल सेन्टर: 1551